CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Jan. 2022, Revised on 18th Feb. 2022, Accepted 15th Mar. 2022

शोध–आलेख

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालको में अधिगम शैली और शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

* जुगल किशोर मजोक, *शोधार्थी*
डॉ. मधु उपाध्याय, *प्राचार्य*
महत्मा गांधी शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालय
गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविधालय , बासंवाडा राजस्थान
Email - jkmajok79@gmail.com Mob. 9875251544

मुख्य शब्द– *शिक्षित महिलाऐ, अशिक्षित महिलाऐ , अधिगम शैली, शैक्षिक समस्याएँ, माध्यमिक विधालय आदि।*

शोध सारांश

बालक असहाय में पैदा होता है, किन्तु उसकी यह असहाय अवस्था उसके लिए अभिशाप न होकर वरदान सिद्व होती है जो प्राणी जन्म के समय जितना ही असहाय रहता है, उसमे शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता उतनी ही अधिक होती हैं। बालक को खड़ा होना चलना जन्म के समय नही आता, उसे इन क्रियाओ को सीखना पड़ना है। प्रकृति ने मनुष्य के जीवन को इस तरह का बनाया है कि वह बहुत कुछ सीख सके। दूसरे शब्दो में बालक प्रकृति से सीखता हैं।

व्यक्ति एवं समाज की प्रगति के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है, बिना शिक्षा के अथवा बिना शिक्षित सदस्यों के समाज का संचालन भी उचित रू॰ से नहीं हो सकता । उधर मानव जीवन का प्रारम्भ ही शिक्षा द्वारा होता है। मानव–जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। हम सभी यह जानते है कि मनुष्य का अधिकांश जीवन समाज में ही व्यतीत होता है। समाज की अपनी आवयकताएँ होती है, उनकी परम्पराएँ एवं प्रथाएँ बनी रहे। इसके लिए वह भावी सदस्यों को सुशिक्षित करना चाहता है। इसलिए नयी पीढी का समुचित शिक्षा देने का प्रबन्ध करना समाज अपना कर्तव्य समझाता है।

परिचय

शिक्षा से व्यक्ति जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोण बनाता है। जीवन की गुत्थियो को सुलझाने का मार्ग शिक्षा ही प्रशस्त करती है। जीवन बड़ा संघर्षमय होता है। समुचित शिक्षा–दीक्षा से व्यक्ति अपने जीवन को सफल बनाया है। जीवन को उन्नत बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रतिदिन एवं प्रतिक्षण व्यक्ति कुछ न कुछ सीखता रहता है। उसका सम्पूर्ण जीवन शिक्षा है।

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि व्यक्ति के स्वयं के विकास के लिए एवं समाज की उन्नति के लिए शिक्षा परमावश्यक है। जीवन को समुन्नत, सुसभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने में शिक्षा का योगदान अद्वितीय है।

सा विधा या विमुक्तये

अर्थात् वही विद्या अथवा ज्ञान वह है, जो मुक्ति प्रदान करें। परम्पागत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य का चरित्र निर्माण कर उसको स्वय अपने लिए, परिजनों के लिए, समाज के लिए और अन्तः राष्ट के लिए उपयोगी बनाना रहा है। शिक्षा प्राप्त मनुष्य का जीवनोद्देश्य समाज, देश और विश्व कल्याण रहा है। यही कारण है कि आज की तुलना में भौतिक सुख–साधनों की दृष्टि से अल्पता के पश्चात् ही आत्म चरित्र एवं सन्तोष के बल पर विश्व समाज में अपेक्षया अत्यधिक आत्मिक सुख और शान्ति का प्रसार प्रभाव रहा है।

शिक्षा में अधिगम का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। अधिगत ही शिक्षा की आधारशिला है। अधिगम के आधार पर विधार्थियों में परस्पर भिन्नता पायी जाती है। सामान्य तौर पर सीखने का अर्थ व्यवहार परिवर्तन से लिया जाता हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि व्यवहार में हुए हर प्रका के परिवर्तन को सीखना नहीं कहा जा सकता। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अधिगम या सीखने का तात्पर्य मात्र उन परिवर्तनों से है जो अभ्यास एवं अनुभव के फलस्वरूप अस्तित्व में आते है। यह परिवर्तन अच्छे भी हो सकते है औ बुरे भी जैसे शब्दों का सही–सही पढ़ लेना, सत्य बोलना ये व्यवहार में अच्छे परिवर्तन के उदाहरण हैं जबकि नशा करना, चोरी करना आदि बुरे परिवर्तन हैं।

प्रत्येक सीखने वाले की अभ्यास की अपनी एक शैली है, प्रत्येक अनुभव पर उसके चिन्तन की भी एक शैली है जो उसके लिए सुविधाजनक है। कोई विधार्थी देखकर सीख लेता है, कोई करके अच्छा सीखता है, कोई सुन के ही सीख लेता है, किसी को चर्चा के माध्यम से सीखने में आसानी होती है। बालकों को अधिगत शैली के साथ–साथ शैक्षिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है।

अतः शोधार्थी ने शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालक–बालिकाओं की अधिगम शैली एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतू प्रस्तुत शोध कार्य का चुनाव किया गया है। जिससे यह पता लगाया जा सके की क्या शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालक–बालिकाओं की अधिगम शैली में अन्तर पाया जाता है एवं बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्या क्या–क्या है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से अधिगम शैली एवं शैक्षिक समस्याओं का पता लगाकर उनका समाधान खोजने का प्रयास किया जायेगा।

इस संसार में विधा के समान नेत्र नहीं है और माता के सामान गुरू नहीं है। यह बात पूरी तरह सच हैं। कहा भी गया है, नास्ति विधासमं चक्षुर्नास्ति मातृ समोगुरूः अतः बालक के विकास पर प्रथम औ सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है। माता ही अपने बच्चे को पाठ पढ़ाती है। बालक का यह प्रारम्भिक ज्ञान पत्थर पर बनी अमिट लकीर के समान जीवन का स्थायी आधार बन जाता है। हमारे देश के विकास मे महिला साक्षरता का बहुत बड़ा योगदान है। इस बात को नकारा नही जा सकता है कि पिछले कुछ दशकों से ज्यों–ज्यों महिला साक्षरता में वृद्वि होती आयी है, भारत उतना ही विकास के पथ पर अग्रसर हुआ है। परन्तु स्त्री शिक्षा की स्थिति बहत दयनीय है। देश की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिला शिक्षा का आध्रे से अधिक भाग आज अज्ञान, निरक्षरता एवं अशिक्षा के अंधकार में भटक रहा है। हमारे देश में माता को प्रथम गुरू की श्रेणी में रखा गया है, परन्तु यदि गुरू ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा , संस्कार एवं जीवन मूल्य कैसे दे सकती है।

माध्यमिक शिक्षा बालकों की शिक्षा का महत्वपूर्ण काल होता है। इस अवस्था में बालक अपने अच्छे–बुरे का भान होने लगता है। इस समय उसे ऐसे गुरू, सहयोगी की आवश्यकता होती है जो उसे सही राह दिखा सके एवं उसकी समस्याओं का समाधान कर सके।

शिक्षित महिलाएँ अपने बच्चों की शिक्षा में अशिक्षित महिलाओं की अपेक्षा अधिक सक्रिय भागीदारी निभाती है। वह अपने बच्चों के अधिगम कौशल का निर्माण करती है। बच्चों की शिक्षा में आने वाली समस्याओं का समाधान करती हैं। जबकि अशिक्षित महिलॉए अपने बच्चों को सहयोग नहीं कर पाती है।

अतः शोधकर्ता के मन में यह उत्कण्ठा हुई कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालक–बालिकाओं की अधिगम शैली एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये। जिससे यह पता चल सके कि शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं के बालकों की अधिगम शैली एवं शैक्षिक समस्याओं में क्या भिन्नता है। प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों का लाभ समाज को मिल सकेगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने में सहायक सिद्व होंगे। अतः प्रस्तुत शोध कार्य औचित्य पूर्ण है। इस विषय पर अध्ययन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य निम्न प्रकार है–

1 शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 क्षेत्र के आधार पर शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3 विधालय के प्रकार के आधार पर शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4 लिंगभेद के आधार पर शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5 शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6 क्षेत्र के आधार पर शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

7 विधालय के प्रकार के आधार पर शिक्षित अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

8 लिंगभेद के आधार पर शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1 शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालकों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2 शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध विधि

प्रस्तावित शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या

प्रस्तावित शोध कार्य में राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले के माध्यमिक स्तर के विधार्थियों को लिया जायेगा। अतः माध्यमिक स्तर के विधार्थी प्रस्तुत शोध की जनसंख्या होगी।

न्दादर्श

प्रस्तावित शोध कार्य में राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले के माध्यमिक स्तर के 640 बालक–बालिकाओं को लिया जायेगा। जिसमें शिक्षित महिलाओं के 320 बालक–बालिका एवं अशिक्षित महिलाओं के 320 बालक–बालिका लिये जायेगें। जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

कुल बालक
640

शिक्षित महिलाओं के बालक
320

अशिक्षित महिलाओं के बालक
320

शहरी क्षेत्र के बालक
160

ग्रामीण क्षेत्र के बालक
160

शहरी क्षेत्र के बालक
160

ग्रामीण क्षेत्र के बालक
160

चर

प्रस्तावित शोध के चर निम्न प्रकार है–

स्वतंत्र चर– बच्चों की अधिगम शैली एवं शैक्षिक समस्याऍं

आश्रित चर– शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चे

उपकरण

प्रस्तावित शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

अधिगम शैली

शोधार्थी द्वारा बालक–बालिकाओं की अधिगम शैली का अध्ययन करने हेतू के.एस.मिश्रा द्वारा निर्मित अधिगम शैली परीक्षण हिन्दी दर्जन का प्रयोग किया जायेगा।

शैक्षिक समस्या

शोधार्थी द्वारा बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करने हेतू स्वनिर्मित उपकरण विधार्थियों की शैक्षिक समस्या मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकी

प्रस्तावित शोध में मध्यमान मानक विचलन टी–परीक्षण तथा आवश्यकतानुसार अन्य सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तावित शोध कार्य राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले तक समिति रहेंगा।
2. प्रस्तावित शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के कक्षा 9व10 में अध्ययनरत विधार्थियों लिया जायेगा।
3. प्रस्तावित शोध कार्य में केवल शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी विधालयो में अध्ययनरत विधार्थियो को ही लिया जायेगा।
4. प्रस्तावित शोध कार्य में केवल अधिगम शैली एवं बालकों की समस्याओं का अध्ययन किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अरोड़ा , रीता एवं मारवाह सुदेश, शिक्षा मनोविज्ञान एवं साख्यिकी जयपुर, शिक्षा प्रकाशन

बिजारणियां रवि, सैनी सुभाष चन्द्र एवं सैनी कमलेश 2011 अधिगम के लिए आकलन जयपुर अरिहंत शिक्षा प्रकाशन

शर्मा हनुमान सहाय तलेसरा सुषमा एवं बानू जेहरा 2016 बाल्यावस्था एवं विकास प्रकिया जयपुर अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन

भारतीय आधुनिक शिक्षा : एन.सी.ई.आर..टी. नई दिल्ली

एजूस्टेक्स : नीलकमल पब्लिकेशन्स प्रा. लि. हैदराबाद

संध्या 2004 : माध्यमिक स्तर पर कला तथा विज्ञान वर्ग के विधार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन , लधुशोध्र प्रबन्ध , राजा हरपाल सिंह पी.जी.कॉलेज , जौनपुर

www.desertation.com

www.shodhganga.com

www.wikiencyclopedia.com

*** Corresponding Author**

जुगल किशोर मजोक, *शोधार्थी*

डॉ. मधु उपाध्याय, *प्राचार्य*

महत्मा गांधी शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालय

गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविधालय , बासंवाडा राजस्थान

Email - jkmajok79@gmail.com Mob. 9875251544